अथ सप्तमोध्यायः

सातमाँ ग्यान-बिग्यान योग अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ, योगं युञ्जन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां, यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(किरसण नै आग्गै बात बढाई)

मुझ सब कै परमात्मा मैँ तैँ, आप्णा चित्त लगा पिरथासुत।
रोक चित्त नै मेरै आस्रित, हो कैँ मेरे भाई अर्जन।
साँसा इस मैँ कोए नाँ सै, मन्नै ज्यूँ तैँ जाणै, वा सुण।। १

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्, ज्ञातव्यमवशिष्यते।। २

ग्यान तन्नै मैँ खास निज कै, अनुभव 'बिग्यान' सहित अर्जन।
पूरी तह्रियाँ बोल्लूँगा इब, जाण जिसै नाँ फेर किमे नाँ।
जाणन जोग्गा बाक्की रहँदा।। २

मनुष्याणां सहस्रेषु, कश्चिद् यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां, कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।। ३

(बिरले करदे ग्यानसाधना)

हज़ार-हज़ाराँ माणसाँ मैँ, कोए जूज्झै मुक्ती खात्तर।
कोसिस करदे सिद्धी पाए, बन्धन जिन के टूट्टे, उन मैँ।
कोए मेरा तन्त पिछाणै।। ३

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।। ४

(आठ तह्राँ की मेरी प्रक्रिती)

धरती, पाणी, आग, पोन, नभ, मन अर बुद्धी, 'मैँ' का होणा।

हँकार भाव 'मैं' का कारण, आठ 'प्रकृति' ये मूल बीज सैं।।
मेरी सारी आठ तह्याँ की, मैं सूँ इन तैं सृस्टी करदा।
इस नै मेरा सुभा समझ तैं।। ४

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो, ययेदं धार्यते जगत्।। ५

(इस तैं ऊँच्ची जीव प्रक्रिति सै)

'अपरा' नीच्ची प्रक्रिती मेरी, या सै सृस्टीबन्धन करणी।
किन्तू इस तैं न्यारी ऊँच्ची, प्रक्रिति जाण तैं जीव रूप मैं।
वीर महाभुज अर्जन, जिस तैं, धारण हो सै इस दुनियाँ का।। ५

एतद्योनीनि भूतानि, सर्वाणीत्युपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः, प्रभवः प्रलयस्तथा।। ६

(सारी स्रिस्टी बणी इन्हैं तैं)

जो ये सैं अर होंगे आग्गै, सभी पदारथ दुनियाँ भर मैं।
इन की जड़ ये दोन्नूँ प्रक्रिती, या तैं अर्जन, मन मैं धर ले।
मैं सूँ सारी दुनियाँ का ए, जलम मरण का कारण अर्जन।। ६

मत्तः परतरं नान्यत्, किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं, सूत्रे मणिगणा इव।। ७

(मुझ परमात्मा तैं ऊप्पर नाँ कुछ)

मत्तै ऊप्पर नहीं ओर कुछ, सै अर्जन, मेरै मैं सै सब ये।
जगत्, पिरोया ताग्गै मैं हों, मणके सारे माळा के ज्यूँ।
न्यारे-न्यारे मणक्याँ मैं सै, ताग्गा उन नै एक करै यो।। ७

रसोऽहमप्सु कौन्तेय, प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु, शब्दः खे पौरुषं नृषु।। ८

(चौदाह् रूप्पाँ मैं मैं सूँ)

[१]मीठ्ठापण बण पाणी मैं मैं, कुन्ती के सुत, [२]चमक रूप मैं।
ब्यापत सूँ मैं चाँद-सुरज मैं, [३]ओ३म् नाद मैं सब बेद्दाँ मैं।।

[४]गूँज बण्या मैं नभ मैं स्थित सूँ, [५]उद्यम, धीरज, शौर्य, पराक्रम।
गुण ये बण कैं मर्दां मैं सूँ।। ८

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च, तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं सर्वभूतेषु, तपश्चास्मि तपस्विषु।। ९

[६]महक पवित्तर धरती मैं सूँ, [७]ताप रूप मैं अग्गी मैं मैं।
[८]खानपान का इमरत रस मैं, [९]आयू बण सब भूत्ता मैं सूँ।
[१०]सहनसीलता तपसी जन मैं, न्यूँ मैं ब्यापत सारे जग मैं।। ९

बीजं मां सर्वभूतानां, विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि, तेजस्तेजस्विनामहम्।। १०

[११]बीज रहणियाँ सदा-सदा नै, तोड़ आवरण जाम्मै प्रगटै।
मन्नै सब भूताँ का तैं इब, जाण प्रिथा के सुत हे अर्जन।।
[१२]बुद्धी मैं सूँ सही ग़लत नै, जाणन आळै ग्यान्नी जन की।
[१३]तेज ओज सूँ तेजस्वी का।। १०

बलं बलवतां चाहं, कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु, कामोऽस्मि भरतर्षभ।। ११

[१४]ताकत ताकतवर की अर मैं, तिस्णा लगाव जिस सँग ना हो।
[१५]इस काया मैं अर कर कै बी, धारै जन नै, गिरणै नाँ दे।।
इसा आचरण धरम कुहावै, उस की जो न बिरोधी होवै।
चाहत वा मैं भूत्ताँ मैं सूँ।। ११

ये चैव सात्त्विका भावा, राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि, न त्वहं तेषु, ते मयि।। १२

(त्रिगुणाँ तैं जो सैं वो मत्तैं)

[१६]अर जो कुछ दुनियाँ मैं होवैं, स्थूल'र सूक्सम दो तह्रियाँ के।
तीन गुणाँ के कमती, बिचले, अधिक माप मैं मिलणै तैं सैं।।
सात्त्विक, राजस, तामस होवैं, सत्त्व रहे गुण मुखिया जिन मैं।
वैं सैं सात्त्विक चीज सभी अर, चञ्चलता सै मुखिया जिन मैं।।

राजस भाव कुहावैं वैं सैं, ठस्सपणा अर अन्धेरा-सा।
नाँ-समझी अर मोह भरम-सा, सून्नापण अनुभव करणा।।
तामस भाव कुहावै यो सै, यैं जो सारे हाल जगत मैं।
मत्तै ए सैं जाण सभी नै, नाँ मैं उन मैं आस्रित सूँ रै।
वैं सैं मेरै पै, पर, आस्रित।। १२

(तीन गुणाँ नै जग यो मोह्या)

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति, मामेभ्यः परमव्ययम्।। १३

तीन गुणाँ तैं बणी स्थिती ये, इन तैं सब सै जग भरमाया।
नहीं पिछाणै मन्नै इन तैं, ऊप्पर अर अविकारी अर्जन।। १३

दैवी ह्येषा गुणमयी, मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते, मायामेतां तरन्ति ते।। १४

(मन्नै आ क्यैं उन तैं छूट्टै)

तेज ग्यानमय नित्य विभायुत, अविकारी अर नित्य परात् पर।
मैं इस दुनियाँ का सूँ, देव प्रकासक ओर प्रकासित।।
उस की या सै तीन गुणात्मक, 'माया' निर्मात्री माँ प्रक्रिती।
निर्माण करै या सारै जग का, पार न पाया इस का जावै।
मेरी ए जो सरण पड़ैं सैं, माया या वैं पार करैं सैं।। १४

न मां दुष्कृतिनो मूढाः, प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययाऽपहृतज्ञाना, आसुरं भावमाश्रिताः।। १५

(दुष्कर्मी नाँ मन्नै पावैं)

नाँ मन्नै सैं बुरे कमन्तर, ओच्छे खोट्टे काम करणिये।
प्होंच कदे पाँवैं मोहधँसे, घटिया माणस रै पिरथासुत।।
तह्राँ-तह्राँ की राह दिखा कैं, माणस का जो ग्यान हरै सै।
उस माया तैं नस्ट ग्यान तैं, साँस चालणै मैं ए रमदे।।
साँस्साँ तैं चलदी काया ए, आच्छी लाग्गै, उस मैं रह खुस।
'असुर'-प्रवृत्ती पै हो आश्रित।। १५

(भगत् जगत मैं च्यार तह्राँ के)

चतुर्विधा भजन्ते मां, जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।। १६

च्यार ढाळ के सेवा करदे, मेरी सरण गहैं सुभकर्मी।
अर्जन [१]पीड़ित पड़्या कस्ट मैं, [२]ततवग्यान जो पाणा चाह्वै।।
[३]स्वार्थ किमे जो पाणा चाह्वै, अर [४]मन्नै समझै जो माणस।
'भरत' करै जो पालन-पोसण, आण्णी परजा का, उस कुळ मैं।
करम ग्यान तैं चिमकणिये हे।। १६

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त, एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।। १७

(उन मैं प्यारा ग्यान्नी मन्नै)

इन मैं तैं [४]मन्नै समझण आळा, नित जो मुझ तैं जुड़्या रहै सै।
एक्कै पै ए आस्रित माणस, बड़ा भगत वो सब तैं हो सै।
प्यारा ग्यान्नी नै भोत्तै मैं, वो बी मन्नै प्यारा हो सै।। १७

उदाराः सर्व एवैते, ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा, मामेवानुत्तमां गतिम्।। १८

आच्छे, ऊप्पर ऊट्ठणिये ये, सारे होन्दे, पर इन मैं बी।
'ग्यानी तो मैं ए सूँ', यो सै, मेरा मन्तब पिरथा के सुत।।
टिकदा क्यूँकी एकचित्त वो, मन नै मुझ पै सदा लगाए।
मन्नै ए पर लक्स्य समझदा।। १८

बहूनां जन्मनामन्ते, ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।
वासुदेवः सर्वमिति, स महात्मा सुदुर्लभः।। १९

जलम भोत से बीत्त्याँ पाच्छै, 'परमात्मा ए सब कुछ यो सै'।
समझ बात या मन्नै पावै, वो महापुरुस मिलणा मुस्कल।। १९

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः, प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय, प्रकृत्या नियताः स्वया।। २०

(किमे चाहँदे भगत ओर के, उन का बी मैँ भला करूँ सूँ)

ढाळ-ढाळ की इच्छा कर कैँ, भ्रस्टमती ओर देवत्याँ की।
सरण पडैँ सैँ लोग भोत-से, मनमाफिक सिद्धान्त बणाँ कैँ।
आप्णी-आप्णी ढफळी पीट्टैँ, आप्णे-आप्णे राग लिकाड़ैँ।
बँधे सुभा तैँ सारे माणस।। २०

यो यो यां यां तनुं भक्तः, श्रद्धयाऽर्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां, तामेव विदधाम्यहम्।। २१

जो-जो जिस-जिस देव-रूप नै, भगत पूजणा सर्धा रख कैँ।
चाह्वै उस की उस की उस्सै, सर्धा नै मैँ स्थिर कर द्यूँ सूँ।। २१

स तया श्रद्धया युक्तस् तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्, मयैव विहितान् हि तान्।। २२

वो उस सर्धा तैँ निज मन नै, रोक लगा कैँ उस मैँ थिर कर।
उस की पूजा करदा माणस, पावै सै अर उस तैँ आप्णी।।
इच्छा के फळ मन्नै ए जो, सभी बणाए आप्णी बिधि तैँ।
उन नै सब नै मैँ ए द्यूँ सूँ।। २२

अन्तवत् तु फलं तेषां, तद् भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान् देवयजो यान्ति, मद्भक्ता यान्ति मामपि।। २३

भेदबुद्धि या हो सै थोड़ी, उस मैँ पड़ देवाँ के पूजक।
करदे जो कुछ, वो थोड़ा अर, नस्ट होणियाँ ए हो सै।।
उन थोड़ी बुद्धी आळ्याँ के, उन कर्मा का फळ रै अर्जन।
देवाँ नै देव पूजदे जाँ, मेरे सेवक मन्नै बी।
थोड़े तो उन नै मिलदे ए, बे-अन्त मोक्स बी पाँवैँ वैँ।। २३

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं, मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो, ममाव्ययमनुत्तमम्।। २४

(नाँसमझे मन्नै परगट समझैँ)

नाँ मैँ परगट, इन्द्रियगोचर, समझैँ मन्नै व्यक्त अनाड़ी।

बुद्धिरहित अविवेकी माणस, परम तत्त्व वो नहीँ जाणदे।
मेरा जो अविकारी उत्तम, जिस तैँ, बढ़ कैँ किम्मे नाँ सै।। २४

नाहं प्रकाशः सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति, लोको मामजमव्ययम्।। २५

(नहीँ प्रगट मैँ सब नै होन्दा)

नाँ मैँ प्रगट प्रकासित सब नै, तीन गुणाँ कै जोड़-भाग तैँ।
सक्ति बणै जो जग की माँ सै, उस मैँ मैँ सूँ ढँक्या-छुप्या-सा।
उस तैँ भरमाई या दुनियाँ, नहीँ पिछाणै जलमरहित अर।
अविकारी मन्नै रै भाई।। २५

वेदाहं समतीतानि, वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि, मां तु वेद न कश्चन।। २६

(नाँ सै जाणै मन्नै कोए)

जाणूँ सूँ मैँ बीत चुक्याँ नै, अर हो ह्वे इस बेला उन नै।
होँगे बी जो सबी पदारथ, उन नै सब नै जाणूँ सूँ मैँ।
मन्नै, पर, जाणै नाँ कोए।। २६

इच्छाद्वेषसमुत्थेन, द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं, सर्गे यान्ति परंतप।। २७

(चाहत द्वेस भरम मैँ गेरैँ)

[१]सही लाग कैँ मन का बँधणा, उस कै रँग मैँ रँग ज्याणा।
राग भाव वो मन मैँ हो सै, [२]'मेरै पा वो होवै', यो सै।।
'इच्छा' भाव कुहाँदा मन का, [३]उस मैँ रोड़ा जो अटकावै।
उस तैँ द्वेस सबै नै होवै, उस का सब सैँ बुरा चीतदे।।
इस तैँ 'द्वेस' दुवेस कुहावै, इन कै कारण होणै आळे।
सुख-दुख रहँदे आम्हीँ-स्याम्हीँ, इक-दूजे के घोर विरोधी।।
इन कै कारण भरम बुद्धि मैँ, हो सै, उस तैँ सारे प्राणी।
काया पा कैँ घणै मोह मैँ, पड़दे बँधदे दुनियाँ मैँ आ।। २७

येषां त्वन्तगतं पापं, जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता, भजन्ते मां दृढव्रताः।। २८

(पापरहित हो छूट मोह तैँ, माणस करदा मेरी भगती)

जिन नै आच्छे करम करे सैँ, इब बी जो सैँ आच्छा करदे।
इस तह्रियाँ के जिन पुण्यात्मा के, पाप ओड़ पै आ ज्यावैँ सैँ।
आप्पस मैँ इन सदा विरोधी, पाप-पुण्य अर दुख-सुख कारण।
होए मोह् तैँ बिल्कुल छूट्टे, मेरे भगत बणैँ सैँ मेरी।
सरणे आन्दे नेम-धरम पै, टिक कैँ रहँदे मज़बूत्ती तैँ।। २८

जरामरणमोक्षाय, मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्।।२९

बूड्ढा, बेबस, जर्जर काया, हो कैँ माणस मर ज्यावै जो।
उन कै दुख तैँ छूट्टण खात्तर, मेरा आस्रै लेवैँ सैँ जो।
मेरी सरण ग्रहण कर माणस, जतन करैँ सैँ, वैँ सारे।
उस परं ब्रह्म नै जाणैँ अर, खुद मैँ पूर्यै जीवात्मा नै।
अध्यात्म ततव नैँ जाणैँ अर, जाणैँ साङ्गोपाङ्ग करम बी।। २९

साधिभूताधिदैवं मां, साधियज्ञं च ये विदुः।
प्रयाणकालेऽपि च मां, ते विदुर्युक्तचेतसः।। ३०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोध्यायः।।७।।

सृस्टि बणाँदे सब भूत्ताँ सँग, उन नै भासित चेतन करदे।
देवाँ कै सँग मन्नै माणस, यग्ग्य करम सँग जो जाणैँ सैँ।।
दुनियाँ तैँ जाणै का मोक्का, आणै पै बी मन्नै जाणैँ।
रुकी चित्त की व्रित्ती आळे, भूत्ताँ अर देवाँ कै सँग जो।
यग मैँ ब्याप्यै मन्नै जाणैँ।। ३०

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ सातमाँ अध्याय पूरा होया।।७।।

पूर्वसलोकयोग २८० + ३० = ३१०